8

बपतिस्मा सब जातियों के लिए था

''और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)।

यीशु ने अपने अनुयायियों को *यरूशलेम से लेकर* (लूका 24:47), सारे संसार में जाकर सब जातियों में सुसमाचार प्रचार करने की आज्ञा दी थी (मत्ती 28:19; मरकुस 16:15, 16)। पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2:1), यीशु के नाम में क्षमा की पेशकश का प्रचार करने वाला पहला व्यक्ति पतरस ही था। उसने कहा कि यह संदेश वहां उपस्थित लोगों, उनके बच्चों, दूर-दूर तक रहने वाले लोगों अर्थात हर युग की सब जातियों के लिए है (प्रेरितों 2:39)। प्रेरितों के काम की पुस्तक आरम्भिक मसीहियों द्वारा उनको मिली यीशु की योजना की गतिविधियों से सम्बन्धित है (प्रेरितों 1:8)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलने वाले बपतिस्मे पर फ्रेड्रिक डेल ब्रूनर ने अच्छा निष्कर्ष निकाला है। उसने कहा, ''प्रेरितों के काम में बपतिस्मा कुल मिलाकर व्यक्तिगत उद्धार अर्थात सुसमाचार का संदेश, मन फिराव, क्षमा, पवित्र आत्मा का दान और कलीसिया में मिलाए जाने के सभी तथ्यों के लिए है।''[1]

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनुष्य के उद्धार के लिए आवश्यक बातों को शामिल *करने* के बजाय इसमें कुछ मन फिराव की घटनाएं और अधिकतर घटनाओं में, संदेश सुनने, विश्वास करने, और बपतिस्मा लेने की बात लिखी गई है। इनमें से किसी एक शर्त के शामिल होने से, अन्य बातों का अनुमान लगाया जाता है। यदि यह सत्य नहीं है, तो अन्य आयतों के कथन जो संकेत देते हैं कि उद्धार के लिए इनमें से एक से अधिक की आवश्यकता है, को गम्भीरता से लेने की आवश्यकता नहीं है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक बताती है कि किस प्रकार से सुसमाचार पहली शताब्दी में संसार में फैलने लगा है। आरम्भिक मसीहियों की गतिविधियां यीशु मसीह के अधिकार (*नाम*) पर आधारित थीं (कुलुस्सियों 3:17)। इन गतिविधियों में शिक्षा देना, आश्चर्यकर्म और बपतिस्मा शामिल थे (प्रेरितों 2:38; 3:6, 16; 4:10, 12, 30; 5:41; 8:12, 16;

9:27, 28; 10:43, 48; 15:26; 16:18; 19:5; 22:16)।

संदेश

पिन्तेकुस्त के दिन बहुत से लोगों द्वारा वचन ग्रहण करने और मसीही बनने के बाद (प्रेरितों 2:41; 4:4; 5:14; 6:1, 7), कलीसिया मुख्य रूप से शाऊल जो बाद में पौलुस के नाम से प्रसिद्ध हुआ (प्रेरितों 13:9) द्वारा कलीसिया का सताव शुरू होने तक (प्रेरितों 8:3) यरूशलेम में ही केन्द्रित थी। फिर यह संसार के अन्य भागों में फैलने लगी थी। फिलिप्पुस ने मसीह का प्रचार सामरिया में (प्रेरितों 8:5) और फिर इथियोपिया के एक मन्त्री को किया था (प्रेरितों 8:35)।

मसीह के प्रचार में स्पष्टत: यीशु मसीह के नाम (प्रेरितों 8:5, 35), बपतिस्मा (प्रेरितों 8:12, 36), यीशु की मृत्यु (प्रेरितों 2:23, 36; 3:15; 4:10; 5:30; 10:39; 13:28), उसके राज्य (19:8; 20:25; 28:23, 31) और उसके पुनरुत्थान (प्रेरितों 2:24, 32; 3:15; 4:2,10, 33; 10:40; 13:30; 17:3, 18, 31; 23:6; 24:15, 21; 26:8, 23; 1 कुरिन्थियों 2:1, 2) की शिक्षा शामिल थी। प्रेरितों के काम की पुस्तक में *कहीं भी यह नहीं कहा गया* है कि यीशु की मृत्यु या लहू से पाप *क्षमा* होते हैं। परन्तु, संदेश में अवश्य ही शामिल होगा, क्योंकि यीशु का लहू ही हमारे पापों को धोता है (1 यूहन्ना 1:7)। उसके लहू से ही हम धर्मी ठहराए जाते हैं (रोमियों 3:25) और बिना लहू बहाए क्षमा होती ही नहीं है (इब्रानियों 9:22)। बेशक प्रेरितों के काम की पुस्तक में यह नहीं लिखा गया कि पौलुस ने मसीह के क्रूस का प्रचार किया (प्रेरितों 13:16-47; 14:15-17; 17:22-31; 20:18-35; 22:3-21; 23:6; 24:10-21; 26:4-23 में पौलुस के प्रवचनों को देखें)। पौलुस ने लिखा कि उसने क्रूस का प्रचार किया है (1 कुरिन्थियों 2:1, 2)। यह इस बात का प्रमाण होना चाहिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में मन परिवर्तन के लिए कही और की गई सब बातों को नहीं लिखा गया है। उद्धार की पूरी तस्वीर उद्धार के सम्बन्ध में नये नियम की शिक्षाओं को मिलाकर ही बनाई जा सकती है।

फिलिप्पुस का प्रचार

फिलिप्पुस का प्रचार पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों 2:1) यरूशलेम में पतरस द्वारा किए गए प्रचार जैसा ही होगा (प्रेरितों 2:38; लूका 24:47)। फिलिप्पुस दूसरे बहुत से लोगों के साथ जो प्रेरितों की शिक्षा में लौलीन थे (प्रेरितों 2:42), यरूशलेम में सब प्रेरितों के साथ ही था (प्रेरितों 6:2-5)। इसलिए, वह उनकी शिक्षा से अच्छी तरह परिचित होगा और उसने वही प्रचार किया होगा जो वे भी करते थे। इस सत्य से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि लोगों ने बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के प्रचार को वैसे ही ग्रहण किया (प्रेरितों 8:12, 35-39) जैसे उन्होंने पतरस के प्रचार को माना था (प्रेरितों 2:41)।

जिन्होंने पतरस को सुना था, बेशक वे यहूदी श्रद्धालु थे (प्रेरितों 2:5), तथा जिन्होंने फिलिप्पुस को सुना वे पापी थे जिन्हें यीशु के लहू से उद्धार की आवश्यकता थी

(रोमियों 3:23-25)। इसलिए उन्हें वह संदेश दिया गया जो सब लोगों के लिए प्रासंगिक था (प्रेरितों 15:9)। यीशु ने कहा था कि उसका संदेश यरूशलेम से आरम्भ होगा और सब जातियों में उसका प्रचार किया जाएगा (लूका 24:47)। मनुष्य जाति के साथ परमेश्वर का व्यवहार एक समान है और वह पक्षपात नहीं करता (रोमियों 2:5-11)। यदि पतरस के पहले प्रवचन को सुनने वाले सब लोगों के लिए पापों की क्षमा के लिए मन फिराना और बपतिस्मा लेना आवश्यक था (प्रेरितों 2:38), तो हर जगह सब लोगों को वही करना आवश्यक है, जिनमें वे लोग भी शामिल थे जिनमें फिलिप्पुस ने प्रचार किया था।

इसलिए, जितने लोगों ने फिलिप्पुस के प्रचार को ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया था (प्रेरितों 8:12, 38)। बेशक फिलिप्पुस का प्रचार लिखित रूप में उपलब्ध नहीं है, परन्तु निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उन सब को वही संदेश बताया गया था जिसका प्रचार पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन किया था। प्रेरितों के काम की पुस्तक जल और आत्मा से जन्म लेने की व्याख्या करती परमेश्वर की ऐतिहासिक टीका है। यीशु ने श्रद्धालु नीकुदेमुस को बताया कि हर किसी को चाहे वह धर्मी हो या अधर्मी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:3-5; प्रेरितों 8:12)।

ब्रूनर ने इथियोपियन मन्त्री के मन परिवर्तन पर अच्छी टिप्पणी की है:

> शास्त्र के इस भाग में न तो पापों की क्षमा का उल्लेख है और न ही यह कि उस खोजे ने विश्वास किया। परन्तु बपतिस्मे में सब बातें आ जाती हैं। प्रेरितों के काम में बपतिस्मा ''विश्वास'' और ''क्षमा'' की बात कहता है जो निश्चय ही ''पवित्र आत्मा के दान'' की बात भी है (प्रेरितों 2:38-41)। प्रेरितों के काम में व्यक्तिगत उद्धार के सभी तथ्यों के लिए बपतिस्मा मिला जुला शब्द है अर्थात सुसमाचार का संदेश, मन फिराव, क्षमा, पवित्र आत्मा का दान, और कलीसिया में मिलाए जाना।[2]

इथियोपियन मन्त्री के बारे में कही गई बातों से, कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं: (1) उसे यीशु के बारे में सिखाया गया (प्रेरितों 8:35); (2) वह बपतिस्मा लेकर यीशु की बात मानना चाहता था (प्रेरितों 8:36); (3) उसने यीशु को मसीह मानकर उस पर विश्वास किया; (4) वह यहूदी से मसीही बनने के लिए परिवर्तित होने का इच्छुक था (प्रेरितों 8:36) अर्थात वह मन फिराना चाहता था; और (5) उसने पापों की क्षमा पाने की इच्छा प्रकट करते हुए बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 8:38)। इस मनपरिवर्तन की बात के लिखे जाने से संकेत मिलता है कि उसने वही आदर्श अपनाया जो यीशु के अनुयायी बनने वाले दूसरे लोगों ने अपनाया था।

शाऊल का मनपरिवर्तन

शाऊल जिसे पौलुस के नाम से भी जाना जाता है, के मनपरिवर्तन के तीन वृत्तांत (प्रेरितों 13:9), एक बार लूका द्वारा (प्रेरितों 9:1-20) और दो बार शाऊल द्वारा बताना

(प्रेरितों 22:1-16; 26:1-18) कलीसिया के इतिहास में उसके मनपरिवर्तन के महत्व को बताते हैं। यीशु ने शाऊल को प्रेरित नियुक्त करने के उद्देश्य से (प्रेरितों 26:16 में यीशु द्वारा बताया गया) दर्शन दिया था। उसने अन्यजातियों के लिए एक विशेष प्रतिनिधि बनना था (गलतियों 1:1; प्रेरितों 26:16-18)।

यीशु ने शाऊल को दर्शन यह आश्वासन देने के लिए नहीं दिया था कि वह बचाया गया है; बल्कि उसने कहा था कि उसे दमिश्क में बताया जाएगा कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6; 22:10) और फिर उसे बताने के लिए हनन्याह को भेज दिया गया (प्रेरितों 22:14-16)। बेशक उस कार्य के लिए जो उसने मसीह के लिए करना था वह एक विशेष व्यक्ति था, परन्तु पौलुस को अपने पापों को धोने के लिए वैसे ही वचन को मानना आवश्यक था जैसे दूसरे लोगों के लिए था (प्रेरितों 22:16)।

प्रेरितों 22:16 पर ब्रूनर की टिप्पणी विचारणीय है:

> पौलुस हनन्याह की बातों को याद करता है, '' 'अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल' '' (प्रेरितों 22:16)। पौलुस के पाप बपतिस्मे से ही मिट सकते हैं। प्रेरितों के काम में पिन्तेकुस्त के दिन के बाद बपतिस्मे के पहले उद्धरण से भी यह सम्बन्ध बन जाता है, '' '... अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए ... बपतिस्मा ले' '' (प्रेरितों 2:38)।
>
> ... *पौलुस* को उठकर बपतिस्मा लेना है। यदि कोई इसे एक काम या शर्त कहना चाहता है और उसे इस शब्दावली का इस्तेमाल न करने की सलाह दी जाती है, तो वर्तमान में एकमात्र ''शर्त'' बपतिस्मे के लिए चलना है। फिर भी जैसे लूका ने ज़ोर देकर कहा, यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि यह चलना उस विश्वास के द्वारा हो सका जो सर्वशक्तिमान प्रभु के द्वारा कार्य करता है (तु. उदाहरण के लिए प्रेरितों 3:16)।
>
> परन्तु, यह मनुष्य का कर्त्तव्य है और हो सकता है कि इस कर्त्तव्य को (अर्थात, आत्मिक, सही कर्त्तव्य नहीं, बल्कि केवल बपतिस्मे का) प्रेरितों के काम जैसी गम्भीरता से लेने में असफल होने पर हम दूसरी दिशा में जाने की गलती करें।
>
> यहां पर व्याकरण में भी व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर ज़ोर दिया गया है। ''be baptized'' और ''wash'' की यूनानी रचना में अनिश्चित भूतकाल आदेशसूचक मध्य का इस्तेमाल किया गया है। आवश्यक नहीं कि मध्यस्वर का अर्थ ''baptize yourself'' हो ''cleanse yourself'' नहीं, बल्कि इसका अर्थ है ''बपतिस्मा लेकर शुद्ध हो जा।'' ... फिर भी, यह काम पौलुस ने करना है। नये नियम के बपतिस्मे में मानवीय जिम्मेदारी और ईश्वरीय योगदान दोनों मिलते हैं, और उनमें से किसी एक को भी नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता।

फिर तो, प्रेरितों 22:16 से हमें शिक्षा मिलती है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि बपतिस्मे के समय परमेश्वर के द्वारा पाप धोए जाएं और विश्वास में अपने

आपको इस स्थान पर लाना और बपतिस्मा दिलाने में भाग लेना सुनने वाले की जिम्मेदारी है। शास्त्र के इस भाग में आत्मिक बपतिस्मे से सम्बन्धित प्रेरितों के काम की शिक्षा को ठीक ही संक्षिप्त किया गया है। इस पद में पौलुस अपने जीवन के पाप मिटने की घटना को एक ही वाक्य में बता देता है और इसमें हमारे पीछे आज की वह प्रभावशाली शिक्षा जो प्रेरितों के काम के बहुरंगी पदों में है, बड़ी आसानी से समा जाती है। पाप बपतिस्मे से पहले या बाद में किसी मसीही के गहन आत्मिक परिश्रम से नहीं मिटाया जाता, यह तो बपतिस्मे के समय मिटाया जाता है जिससे कोई मसीही बनता है। यह परमेश्वर का अनुग्रह है।[3]

पौलुस ने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बपतिस्मा लिया था जिसने यीशु में विश्वास करके अपने पापों से मन फिरा लिया था। यह स्पष्ट है क्योंकि, वह मसीही लोगों को सताने के लिए दमिश्क की ओर जा रहा था, परन्तु उसने नगर में जाने के यीशु के निर्देश को मान लिया जहां उसे बताया जाना था कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6; 22:10)। वहां पहुंचकर उसने मसीहियों को सताने के बजाय यीशु का निर्देश पाने की प्रतीक्षा में उपवास रखा (प्रेरितों 9:9) और प्रार्थना की (प्रेरितों 9:11)। उसने विश्वास करके मन तो फिरा लिया था, परन्तु उसके पाप अभी धोए नहीं गए थे; उसके विश्वास ने उसे बदल दिया, परन्तु अभी भी उसे बताया गया था, ''... उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)।

कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पौलुस को ''उसका नाम लेकर'' बपतिस्मा लेने और पाप धोने के लिए कहा गया था, इसलिए उसके पाप बपतिस्मा लेने के समय नहीं बल्कि प्रार्थना करते समय ही धुल गए थे। ऐसा निष्कर्ष दो कारणों से सही नहीं हो सकता:

(1) ''लेकर'' के लिए *epikalleomai* शब्द का इस्तेमाल या तो दूसरे नाम के लिए किया जाता है जिसे पुकारना होता है (लूका 22:3; प्रेरितों 1:23; 4:36; 10:5; आदि) या किसी को की जाने वाली अपील के लिए (प्रेरितों 25:11, 12, 21, 25)। पापी उद्धार के लिए यीशु के नाम में अपील करता है (प्रेरितों 2:21; रोमियों 10:13)। इस तथ्य में कुछ महत्व देखा जाना चाहिए कि बेशक प्रेरितों 2:21 में पिन्तेकुस्त के अपने प्रवचन में पतरस ने योएल 2:32 से उद्धृत किया था (''जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा''), परन्तु प्रश्न पूछने वालों को उसने उत्तर दिया था ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)। स्पष्टत:, *यहोवा से प्रार्थना करना* बपतिस्मा लेते समय यीशु मसीह के नाम से पापों की क्षमा के लिए बिनती करना है। यहोवा के नाम में उद्धार के लिए बिनती *यही* होती है।

(2) प्रेरितों 22:16 में ''लेकर'' एक *अनिश्चित भूतकाल कृदंत है* जो मुख्य क्रियाओं ''उठ'' और ''बपतिस्मा ले'' के बाद आता है। रॉबर्टसन के अनुसार, ''जब क्रिया अनिश्चित भूतकाल कृदंत के बाद आती हो तो यह हमेशा समकालीन क्रिया का कृदंत होती है।''[4] इसका अर्थ यह है कि *अनिश्चित भूतकाल कृदंत* ''लेकर'' उसी समय आता है जब मुख्य

क्रियाएं ''बपतिस्मा ले'' और ''धो डाल'' हो रही थीं। धोने के लिए बिनती करने का समय वही है जब बपतिस्मा लिया जा रहा होता है (देखिए 1 पतरस 3:21)।

बपतिस्मे के अन्य उदाहरण

प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखित प्रत्येक मनपरिवर्तन की जानकारी लूका की प्रस्तुति के उद्देश्य के अनुसार परिपूर्णता में अलग-अलग है। मिश्रित तस्वीर से संकेत मिलता है कि *आवश्यकता* क्षमा और नया जीवन पाने की थी। *संदेश* यीशु था और आवश्यक *प्रत्युत्तर* यीशु में विश्वास, मन फिराव और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा था। ये सभी तत्व मन परिवर्तन की प्रत्येक घटना में दर्ज नहीं हैं; परन्तु लूका के लिखने के ढंग से संकेत मिलता है कि किसी जगह जो चीज *आवश्यक* होती थी, वही सब जगह आवश्यक थी, जिसका अर्थ है कि मन परिवर्तन की तस्वीर केवल तभी पूरी होती है जब सब जगह हुए मन परिवर्तनों पर विचार किया जाए।

मसीह का प्रचार किया गया है (प्रेरितों 2:22-36; 4:12; 8:5, 35; 10:36-43); परन्तु इसका उल्लेख सब जगह नहीं किया गया (16:13, 32; 18:4)। मसीह के बारे में क्या प्रचार किया गया यह भी हर जगह शामिल नहीं है (प्रेरितों 8:5, 35), परन्तु संदेश में निश्चय ही यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने, जी उठने और संसार के उद्धारकर्त्ता होने की सभी आवश्यक बातें शामिल थीं। उद्धार पाने के लिए जो कुछ करने की आवश्यकता है उसमें भी यही बात सत्य है, क्योंकि मनपरिवर्तन की किसी घटना में वह सब कुछ नहीं लिखा गया है जो कहा (प्रेरितों 2:40) या किया गया था।

कई जगह बपतिस्मा लेने वालों को विश्वास करने के लिए कहा गया (प्रेरितों 10:43; 13:39; 16:31); कई जगह उन्हें मन फिराने के लिए कहा गया (प्रेरितों 2:38; 3:19; 17:30; 26:20); और कई जगह उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था (प्रेरितों 2:38; 10:48; 22:16)। कई जगह यह लिखा गया है कि उन्होंने विश्वास किया था (प्रेरितों 4:4; 8:12, 13; 9:42; 11:17, 21; 13:12, 48; 14:1; 17:4, 12, 34; 18:8; 19:18)। किसी भी घटना में यह नहीं लिखा गया कि किसी ने मन फिराया था। बहुत सी जगहों पर यह लिखा गया है कि उन्होंने बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 2:41; 8:12, 38; 9:18; 16:15, 33; 18:8; 19:5)। संयुक्त तस्वीर से संकेत मिलता है कि उद्धार की चाह रखने वालों ने सुसमाचार पर विश्वास किया, मन फिराया और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था।

यह नहीं लिखा गया कि बपतिस्मा हर जगह यीशु के नाम में दिया गया था (प्रेरितों 8:38, 39; 9:18; 16:33; 18:8; 22:16), परन्तु यह माना जा सकता है कि ऐसे हुआ था (प्रेरितों 4:12)। चाहे यह *नहीं* लिखा गया कि विश्वास करने और बपतिस्मा लेने वाले लोगों ने *मन फिराया* था (न ही यह लिखा गया है कि यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लेने वालों ने मन फिराया, मत्ती 3:2; लूका 3:3), परन्तु यह माना जा सकता है कि उन्होंने मन फिराया। यही बात बपतिस्मे के विषय में भी सत्य है; बेशक यह तो नहीं लिखा कि सब जगह विश्वास करने वालों ने बपतिस्मा लिया था, परन्तु यह माना जा सकता है कि उन्होंने बपतिस्मा लिया

था, क्योंकि यीशु ने कहा था कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा। आत्मा की प्रेरणा प्राप्त कोई वक्ता यीशु द्वारा दी गई उद्धार की आवश्यक शर्तों को अपने सुनने वालों को बताने में असफल नहीं हुआ।

बिना उद्धार की घटनाएं

पवित्र शास्त्र में मनपरिवर्तनों से जुड़ी कुछ घटनाएं उद्धार के लिए मसीह की शर्तों का भाग नहीं थीं और मन परिवर्तन के अन्य मामलों में भी उनकी अपेक्षा *नहीं* होगी: (1) यीशु ने स्वयं शाऊल को दर्शन दिया था, परन्तु यह दर्शन उसे यह बताने के लिए था कि उसे विशेष गवाह के रूप में चुना गया है (प्रेरितों 26:16-18)। यीशु द्वारा उसके दर्शन के बाद भी, वह अपने पापों में ही था और उसके पापों को धोने के लिए उसके लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक था (प्रेरितों 22:16)। (2) कुरनेलियुस, उसके घराने और उसके कुछ मित्रों ने बपतिस्मा लेने से पहले पवित्र आत्मा पाया था; परन्तु यह एक विशेष घटना थी जिसके द्वारा परमेश्वर ने बाद की सब पीढ़ियों में यह घोषणा की कि यहूदियों की तरह ही अन्यजातियों को भी उद्धार के लिए स्वीकार कर लिया गया है (प्रेरितों 15:7-9)। उनका उद्धार पतरस द्वारा कहे गए उन वचनों द्वारा आया (प्रेरितों 11:14) जिनमें यीशु पर विश्वास करना (प्रेरितों 10:43) और बपतिस्मा लेना (प्रेरितों 10:47, 48) शामिल था।

इन प्रथम अन्य जाति मसीहियों के विषय में ब्रूनर ने लिखा है:

> अध्याय 11 में पतरस यरूशलेम की कलीसिया के सामने कैसरिया में हुई बातों का वर्णन करता है। वह ज़ोर देकर कहता है कि पवित्र आत्मा कुरनेलियुस के परिवार पर वैसे ही उतरा था "जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था" (आयत 15)। यह टिप्पणी महत्वपूर्ण है। पतरस यह नहीं कहता कि पवित्र आत्मा कुरनेलियुस के परिवार पर वैसे ही उतरा "जैसे हमेशा सब लोगों पर उतरता है।" ... लेकिन पतरस द्वारा कैसरिया में घटी घटना की तुलना "आरम्भ में" के साथ करने से इस सम्भावना को बल मिलता है कि पिन्तेकुस्त के दिन के बाद पिन्तेकुस्त के दिन वाली घटनाएं न केवल नमूना थीं बल्कि कई लोगों को तो उनका पता भी नहीं होगा।[5]

क्योंकि परमेश्वर को यह अच्छा लगा था कि अन्यजातियों के लोग सुसमाचार सुनकर विश्वास करें और अपनी इस इच्छा को उसने उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देकर स्पष्ट कर दिया था (प्रेरितों 15:7-9), मनुष्य को कोई अधिकार नहीं था कि कुरनेलियुस और उसके परिवार को बपतिस्मा लेने से रोके (प्रेरितों 10:47)। ऐसा करने का अर्थ परमेश्वर का विरोध करना होता (प्रेरितों 11:17), इसलिए पतरस ऐसा नहीं करना चाहता था। कुरनेलियुस के परिवार पर पवित्र आत्मा का विशेष रूप से दिया जाना सामान्य ढंग नहीं माना जाना चाहिए। अन्यजातियों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देकर, परमेश्वर ने प्रमाणित कर दिया कि अन्यजातियों के लोग भी उद्धार पा सकते हैं और वे वैसे ही मसीही बन सकते

हैं जैसे बपतिस्मा लेने वाले यहूदी। जो बात परमेश्वर एक बार सदा के लिए प्रमाणित कर चुका है उसे दोबारा प्रमाणित करने की कोई आवश्यकता नहीं है; इसी कारण, पानी के बपतिस्मे से पहले पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कभी दोबारा नहीं दिया जाएगा।

1 कुरिन्थियों 12:13

पहला कुरिन्थियों में लिखा है, ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया।'' कई लोग इस आयत का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए करते हैं कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इन दो जगहों से अधिक बार हुआ जिससे यहूदियों और अन्यजातियों के लिए राज्य के द्वार खुल गए। ब्रूनर ने अच्छा लिखा है:

> यदि इस आयत की व्याख्या मसीह में बपतिस्मे के आगे पवित्र आत्मा के दूसरे अर्थात बाद में मिलने वाले और अलग बपतिस्मे के लिए केवल *कुछ* मसीहियों के लिए की जाती है, तो न केवल पवित्र शास्त्र के शब्दों ''सब ... सब'' के साथ ही बल्कि कुरिन्थुस के संदर्भ में पवित्र शास्त्र के उद्देश्य के साथ भी हिंसा होती है। कुरिन्थुस के मसीहियों के नाम पौलुस के संदेश का बोझ मसीह यीशु में बपतिस्मा पाए *सब* लोगों की एकता है।[6]

पौलुस ने कहा कि *सब* ने एक ही बपतिस्मा पाया था, जो कि सब विश्वासियों को एक देह में रखकर एक करने के लिए था। उसके तर्क का तात्पर्य यह है कि *सब* मसीहियों ने यह बपतिस्मा लिया; इसलिए चाहे वे किसी भी जाति, पृष्ठभूमि या सामाजिक स्तर से आए हों *सब* एक ही देह में थे। यदि केवल कुछ चुने हुए लोगों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता, तो सबको एक आत्मा से बपतिस्मा नहीं दिया गया होता और उन्हें उस एकता में नहीं लाया गया होता जिसकी शिक्षा पौलुस दे रहा था।

जल का बपतिस्मा ही वह एक बपतिस्मा है जो प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार सब विश्वासियों ने लिया था, जबकि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा बहुत ही सीमित लोगों को दिया गया था। इस कारण, 1 कुरिन्थियों 12:13 का अर्थ यह लेना चाहिए कि पवित्र आत्मा जल के उस बपतिस्मे के द्वारा सब विश्वासियों को एक देह में लाता है। यह निष्कर्ष निकालना कि बपतिस्मा लेने वाले सब लोगों को एक देह में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया जाता है, प्रेरितों के काम की पुस्तक के ऐतिहासिक प्रमाण पर ध्यान न देना है।

सारांश

प्रेरितों के काम की पुस्तक से पता चलता है कि कैसे आरम्भिक कलीसिया ने विश्वसनीय ढंग से यूहन्ना और यीशु के तैयारी के काम को आधार बनाकर काम किया। मसीही लोगों ने यीशु की शिक्षा का प्रचार किया और उसे अपनाया। जिनके पाप धोए गए थे वे वही लोग थे जिन्होंने क्रूस चढ़ाए, जी उठे प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु के लहू में विश्वास

रखकर पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया था और अपने जीवन उसको समर्पित कर दिए थे। अपने समर्पण के कारण, वे प्रकाश बन गए जिसने प्राचीन संसार को प्रकाश की उस लपट से सुलगाया जो यीशु से उनके द्वारा निकली थी। उनका बपतिस्मा उनके जीवनों में एक मोड़ था, जो बाद में संसार के इतिहास को मोड़ने वाला बन गया।

पाद टिप्पणियां

[1]फ्रैड्रिक डेल ब्रूनर, *ए थियोलोजी ऑफ़ द होली स्पिरिट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: ज़ौंडर्वन, 1970), 189. [2]वहीं। [3]वहीं, 218. [4]ए. टी. रॉबर्टसन, *ए ग्रामर ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट,* 4th ed. (नेशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1923), 1113. [5]ब्रूनर, 194. [6]वहीं, 292.